BKAP777
[1-5]

REVIEW ARTICLE Bhartiya Krishi Anusandhan Patrika

राष्ट्रीय पशुधन मिशन में भेड़–बकरी पालन का स्वरूपः एक समीक्षा

अमरसिंह मीना[1], राजीव कुमार[1], आर.सी. शर्मा[1], पी.के. मलिक[1], एस.एस. मिश्रा[1], अरूण कुमार[1]

सारांश

वर्तमान में देशभर के लोगों का भेड–बकरीपालन की तरफ रूझान बढ़ा है, जिसके पीछे भारत सरकार की राष्ट्रीय पशुधन मिशन की महत्वपूर्ण भूमिका है। भेड़ एवं बकरी पालन देशभर में एटीएम की तरह माना जाता है। जिससे वर्षभर किसी भी समय मांस, दूध एवं उनसे जुडे व्यापारों से आमदनी प्राप्त किया जा सकता है। भेड़ एवं बकरियों का वैज्ञानिक विधि से पालन करने पर अधिकतम उत्पादन लिया जा सकता है। अविकानगर संस्थान सालभर अपने किसानों के ज्ञान में वृद्धि हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम इस दिशा में आयोजित कर रहा है। इस लेख के माध्यम से भेड़ एवं बकरी के विभिन्न क्षेत्र जैसे नस्ल का चयन, आवास व्यवस्था, आहार प्रबंधन, प्रजनन प्रबंधन के साथ स्वास्थ्य प्रबंधन पर विस्तार से वर्णन किया गया है। जिससे भविष्य में भारतीय भेड़ एवं बकरी पालक किसान अपने उपलब्ध ज्ञान में वृद्धि करके पशुधन उत्पादन को बढ़ा सके।

शब्द कुन्जीः प्रजनन, बकरी, प्रबंधन, राष्ट्रीय पशुधन मिशन, भेड़।

Process of Sheep and Goat Rearing Unit under National Livestock Mission: A Review

Amar Singh Meena[1], Rajiv Kumar[1], R.C. Sharma[1], P.K. Mallick[1], S.S. Misra[1], Arun Kumar[1]

10.18805/BKAP777

ABSTRACT

Nowdays, the trend of sheep and goat rearing has increased among the people of the country, behind which the National Livestock Mission of the Government of India has an important role. Sheep and goat rearing is considered like an ATM across the country from which meat, milk and money can be obtained at any time of the year. Maximum production can be taken through rearing small ruminants scientifically. ICAR-CSWRI Avikanagar Institute is organizing training programs in this direction throughout the year to enhance the knowledge of farmers. Through this article, various areas of sheep and goat such as breed selection, housing arrangements, feeding, breeding along with health management have been described in detail.Therefore, Indian farmers may be able to increase the production performance of their animals.

Key words: Breeding, Goat, Management, National Livestock Mission, Sheep.

भारत सरकार के द्वारा भेड़ एवं बकरी के पालन को बढ़ावा देने के लिए एक योजना की शुरूआत की गई हैं, जिसे राष्ट्रीय पशुधन मिशन (एनएलएम) के नाम से जाना जाता हैं। भेड़–बकरी को पुराने समय से ही मानव सार्वजनिक भूमि पर पालन करता आ रहा हैं जिसे हम व्यापक चराई पद्धति के नाम से जानते हैं। परंतुविगत दो दषकों से गॉव के लोगों में जागरूकता एवं थोडी वैज्ञानिक सोच के कारण फील्ड एवं घर के बाड़े में चराई पद्धति अपनाया गया है जिसे अर्द्धसघन पद्धति कहते हैं। इसको आसानी से उपलब्ध सार्वजनिक चरागाहों, पहाड़ो एवं जंगली भूमि पर हरे–सूखे चारे, सीजन की फसलों का सूखा और हरा उत्पादों पर दिनभर 6–7 घण्टे तक चराई की जा रही हैं एवं शाम को बाड़े में सन्तुलित दाना मिश्रण का उपयोग करके अर्द्ध–सघन पद्धति से भेड़–बकरी का पालन बड़े स्तर पर आसानी से किया जा रहा हैं। अविकानगर संस्थान में भी भेड़–बकरी का पालन अर्द्ध–सघन पद्धति से ही किया जाता है। वर्तमान में कम होती जा रही सार्वजनिक चारागाह भूमि एवं कृषि खेती की बढ़ती तारबन्दी के कारण छोटे रोमांथी पशुओं का पालन भी घर पर बने बाड़ों पर ही भविष्य में किया जाएगा।

[1]Division of Animal Genetics and Breeding, ICAR-Central Sheep and Wool Research Institute, Avikanagar-304 501 Rajasthan, India.

Corresponding Author: Amar Singh Meena, Division of Animal Genetics and Breeding, ICAR-Central Sheep and Wool Research Institute, Avikanagar-304 501 Rajasthan, India.
Email: amarsingh23@gmail.com

How to cite this article: Meena, A.S., Kumar, R., Sharma, R.C., Mallick, P.K., Misra, S.S. and Kumar, A. (2025). Process of Sheep and Goat Rearing Unit under National Livestock Mission: A Review. Bhartiya Krishi Anusandhan Patrika. 1-5. doi: 10.18805/BKAP777

Submitted: 21-08-2024 **Accepted:** 17-02-2025 **Online:** 19-03-2025

इस विधि को स्टॉल–फीडिंग के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में हमारे संस्थान में इन दोनों पालन पद्धति अर्ध–सघन एवं सघन (स्टॉल फीड) से भेड़पालन किया जाता है। इसका प्रशिक्षण अविकानगर संस्थान में स्ववितपोशित प्रशिक्षण कार्यक्रम देशभर के इच्छुक भेड़–बकरी पालको, प्रगतिशील किसानो, युवाउघमियों, नये स्टार्टअप के लिए आने वाले एन्टरप्रोन्यर को दिया जा रहा है। भेड़–बकरीपालन में देश के किसानों की लगभग 95 प्रतिषत आमदनी पशु को बेचकर ही प्राप्त होती हैं। इसलिए भेड़–बकरी व्यवसाय देशभर मे मॉस की उपलब्धतता को सुनिश्चित करने के लिए भारत–सरकार द्वारा 50 प्रतिशत सब्सिडी के साथ कम से कम दस लाख व अधिकतम एक करोड़ तक के परियोजना का अनुमोदन किया जा सकता हैं (राजीव कुमार एवम सहयोगी, 2022) । इस लेख के माध्यम से देशभर के इच्छुक किसानों को भेड़–बकरी पालन के बेहतर तकनीकी ज्ञान के साथ उसकी संभावनाओं के हिसाब से वर्णन किया जा रहा है। जिससे देशभर के किसान अपने पास उपलब्ध संसाधनों के आधार पर उत्तम पालन पद्धति का चयन कर सकें।

उत्तम नस्ल का चयन

पशुपालन के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण विषय क्षेत्र की जलवायु परिस्थिति के हिसाब से उत्तम नस्ल के भेड़–बकरी की नस्ल का चुनाव करना होता है। क्योंकि भेड़–बकरी की देशभर में विभिन्न प्रकार की जलवायु परिस्थितियों के लिए अलग–अलग तरह की नस्ल का विकास हुआ है। भेड़–बकरी की नस्ल जिस जलवायु परिस्थिति में पाई जाती हैं उसको उसी परिस्थितियों मे ही पालने किया जाना चाहिए जिससे कि उसका अच्छा उत्पादन लिया जा सके। विपरीत परिस्थितियों की नस्ल का पालन अच्छा नहीं होता हैं क्योंकि उसमें उसकी उत्पादन क्षमता कमजोर हो जाती हैं एवम उसको नस्ल अनुकूल वातावरण बनाये रखने में पालक का खर्चा भी ज्यादा आता है। और ज्यादातर पशु की ऊर्जा वातावरण परिस्थितियों की सहनशीलता में चली जाती है। किसी भी भेड़–बकरी का रेवड़ स्थापित करने के लिए पशुओं की खरीद किसी प्रतिष्ठित सरकारी या मूल प्रजनन स्थल के फार्म से ही करनी चाहिए। पशु अपनी चयनित नस्ल के गुणों के अनुरूप होना चाहिए एवम जहाँ से रेवड़ खरीद की गई, वहाँ पर किसी भी तरह की संक्रामक बीमारी का प्रकोप नहीं होना चाहिए। यदि कोई पशुपालक पहली बार भेड़ या बकरी का पालन शुरू करना चाहता हैं तो 10–15 पशुओं के रेवड़ से शुरू करें। भारत देश में विभिन्न क्षेत्रों के हिसाब से विभिन्न प्रकार की भेड़–बकरी की नस्लें उपलब्ध हैं। उनको ही अपने–अपने क्षेत्र में अपनाकर पशुपालन व्यवसाय शुरू करना ही उचित होगा।

पशुपालक द्वारा पशुओं का चयन करते समय उनके लक्षणात्मक गुणों (रंग, रूप, बाहरी आकार, वजन, नस्ल की शुद्धता) के साथ–साथ पशुओं की स्वंय की उत्पादन क्षमता तथा उसके संबंधियों की उत्पादन क्षमता को भी अच्छे से परख लेना चाहिए। जिससे वे स्वस्थ संतति को जन्म दे सके। प्रजनन के लिए उत्तम नर एवम मादा का चयन करना चाहिए, जिससे कि भेड़ों का उत्पादन बढ़ाया जा सके। प्रजनक मेंढे एव बकरे अच्छी नस्ल के होने चाहिए एवं सुदृढ़ कद–काढी व उनकी आयु 11/2–3 वर्ष के बीच होनी चाहिए। अंत–प्रजनन से बचने के लिए प्रजनक नरों को दो वर्श से ज्यादा एक रेवड में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए । पशुपालक को कभी भी अत्यधिक सर्दी और गर्मी में पशुओं को एक से दूसरे जगह बदलाव नहीं करना चाहिए। पशुओं को कम से कम विषम परिस्थितियों वाले मौसम में ही एक से दूसरे स्थान भेजना चाहिए। पशुपालक जिस भी क्षेत्र से प्रजनक पशुओं का रेवड़ खरीदना चाहता हैं उस क्षेत्र की पशुओं की पैदावार क्षमता, स्थानीय पशुधन में समस्या, टीकाकरण आदि के बारे में विस्तार से चर्चा, पशु लेने से पहले कर लेनी चाहिए। जब भी पशुपालक किसी नयी नस्ल के पशु का रेवड़ लाना चाहता हैं तो शुरूवात कम पशुओं का रेवड़ (लगभग दस पशु) अनुकुल वातावरण परिस्थितियों में लाना चाहिए। जिससे विषम मौसम परिस्थितियों से नई नस्ल के पशुओं को बचाया जा सके।

आवास व्यवस्था

भेड़–बकरी के लिए बारिश एवं सर्दी के मौसम में बचाव के लिए छायादार सीमेन्ट/लोहे की चादर का बाड़ा होना चाहिए। भेड़–बकरी दिन एव रात में खुले आसमान में रहने वाला पशु है लेकिन वर्षा ऋतु में बारिश के पानी से भीगने से बचाव के लिए चादरयुक्त बाडा की जरूरत पड़ती है। इसी प्रकार सर्दी के मौसम में रात के समय ओश गिरने के कारण एवं शीतलहर के प्रकोप से बचाव हेतू दीवारयुक्त ऊपर से ढका बाड़ा आवश्यक है जिससे पशुओं को निमोनिया से बचाया जा सके। उपरोक्त मौसम के अलावा ये पशु दिन–रात खुले आसमान के नीचे रहना पसन्द करते है। चादरयुक्त बाड़े के सामने दो फिट दीवार के उपर 6/4 फीट लोहे की जाली के साथ खुला बाड़ा होना चाहिए एवं पानी का निकास उचित ढलान के साथ होना चाहिए। जिससे बारिश का पानी बिना रूके खुले बाड़े से निकल जाए। ढके हुए बाड़े प्रत्येक पशु के लिए उसकी लम्बाई के हिसाब से स्थान (7–8 वर्गफीट) होने के साथ बाड़े में हवा का आर–पार संचरण होना चाहिए। इसी प्रकार बाड़े में सर्दी के

मौसम के लिए उचित सूर्य के प्रकाश आने की जगह जालीनुमा होना चाहिए। ढका हुआ बाड़ा इस तरह होना चाहिए कि उसमें शीतलहर, बारिश की बौछार, हवा का संचरण एवं प्रकाश आदि को रोकने/आने की मौसम अनुसार नियंत्रित किया जा सके। खुले हुये बाड़ा में पशुओं के लिए छायादार वृक्ष होने चाहिए, जो गर्मी में पशुओ को बचाव करके सर्दी के मौसम में चारा वृक्ष के रूप में काम आ सकता है। भेड़–बकरी का बाड़ा ऐसे स्थान पर होना चाहिए जहाँ पर बाढ का पानी आसानी से नहीं आये और पशुओं को चराई, देखरेख, एवं वाहन के परिवहन में कोई दिक्कत ना हो। चौडाई व लम्बाई (20×60 फीट) का चादरयुक्त ढका बाडा जो कि 100–125 पशुओं को रात्रि के समय ठहराव के लिए उपयुक्त होता है।

पशुओं को सूखे, हरे एवं दाना (फीड एव दाना रातिबमिश्रण आदि) को खिलाने के लिए उपयुक्त साईज की मन्जर होनी चाहिए एवं साथ में साफ पानी की मन्जर हो। भेड़–बकरी के पशु को जब भी चारा–दाना दिया जाता है तो प्रतिस्पर्दा पशुओं के बीच होने के कारण ये ज्यादातर चारे, दाने को मूत्र व मेंगनी करके खराब कर देते है। इसकी समुचित प्रबन्धन करके ही हम स्टॉल फीडीग पद्धति में चारा–दाना का अधिकतम उपयोग कर पायेंगे। बीमार पशुओं, बच्चों व ब्याने वाले पशुओं के लिए अलग से बाडा होना चाहिए। ताकि उनकी समुचित प्रकार से देखभाल की जा सके। भेड़–बकरी के बाडे की मिट्‌टी साल में कम से कम एक बार छः इन्च खुदाई कर बाडे से दूर फेंकनी चाािहए और ताजा मिट्‌टी से भरना चाहिए। जिससे पशुओं की पेशाब, मेंगनी की बदबू एवं बाह्य–परजीवीयों के संक्रमण को रोका जा सके। नई मिट्‌टी के नीचे बाड़े में चूना और कीटनाशक पाउडर डाला जा सकता है। कीटनाशक का उपयोग पशुओं को बाहर निकालकर ही करना चाहिए। मिट्‌टी बदलने से पशुओं की पेशाब, मेंगनी जनित बीमारियों को रोका जा सकता है। अधिक अमोनिया पशु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। बीच–बीच में संभव हो तो भेड़–बकरी के बाड़े को खुला छोडना चाहिए। खुले बाड़े में बनी पानी की मन्जर को सप्ताह में एक बार चूना पाउडर से पुताई नियमित करते रहना चाहिए। जिससे पशुओं को पानी के माध्यम से विभिन्न प्रकार के मिनरल्स तत्वों की पूर्ति होती रहे तथा पानी में मच्छर आदि अंडे ना दे सके। बारिश के मौसम में पानी की खेली के पानी की सफाई जल्दी करना चाहिए। जिससे वर्षा जनित कीड़े पानी में पैदा ना हो पाये। आवास–व्यवस्था में वर्षा के पानी की समुचित निकासी होनी चाहिए, जिससे पशुओं और बाड़ो को सुखा रखा जा सके।

आहार प्रबंधन

भेड़ एवं बकरी को अर्द्ध–सघन पद्धति में 6–7 घण्टे के लिए सार्वजनिक चारागाहों एवं रोड़ के दोनों तरफ अच्छे से चराई करानी चाहिए। फिर शाम को बाड़े पर वापस आने पर सन्तुलित दाना रातिब मिश्रण लगभग 300 से 500 ग्राम प्रति पशु के हिसाब से देना चाहिए। यदि फील्ड में चारा अच्छा हैं जिसमें पानी की मात्रा बारिश के समय होने वाले हरे चारे से कम हैं तो शाम को सिर्फ ग्याभिन एवं ताजा ब्याही भेड़ों को सुखा चारा भी शाम को खिलाना चाहिए। इसके बाद ग्याभिन भेड़/बकरी एवं ब्याही हुये पशुओं को अधिकतम 500 ग्राम दलिया के रूप में दाना मिश्रण या उबाल कर खिलाना चाहिए। उबालकर खिलाने पर पशु के लिए पाचन आसान होकर तथा कम से कम दाना मिश्रण बेकार होगा। बारिश के मौसम में सार्वजनिक जगहों पर उपलब्ध हरा चारा में पानी की मात्रा अत्यधिक होने के कारण, पशुओं में डायरिया (दस्त) एवं आफरा पैदा होता हैं जिससे पशुओं में दवाईयों का खर्च बढ जाता हैं और ध्यान न देने पर पशु मर भी सकता हैं। ऐसे हरे चारे के वक्त पशुओं को सुबह/शाम बाडे में सुखा चारा खिलाना चाहिए। जिससे डायरिया की समस्या कम हो एवं पशुओं को कम से कम हरे चारे में चराई करानी चाहिए। क्योंकि ऐसा हरा चारा पशुओं को पोषण देने के बजाय दुर्बलता पैदा करता है।

जबकि स्टॉल फीडींग पद्धति (सघन–पद्धति) में पशुओं को बाडो में सीमित चराई करवाने से डायरिया व आफरा की समस्या नहीं आती है। पशुओं को सुखा और हरा चारा कुट्‌टी की मशीन से कटाई करके खिलाना चाहिए। जिससे चारा कम से कम बर्बाद हो। एक से ज्यादा मेमने देने वाली बहुप्रज अविषान भेड की देखभाल स्टॉल फीडींग पद्धति से की जा सकती है। क्योंकि अविशान स्टॉल फीडिग एवं अच्छे से देखभाल करने पर अच्छी पैदावार देती है। स्टॉल फीडिग से जिसमें कम से कम तनाव (दाना, चारा एव वातावरण आदि) होने पर ही अच्छी आजीविका मिल सकती है। तीन या चार मेमने देने वाली भेड़ के मेमने को अन्य भेड/बकरी का दूध बोतल से दिन में दो–तीन बार पिलाना चाहिए। यह देखभाल दो महीने तक करने पर अतिरिक्त मेमनो को बचा सकते है (मीना एवम सहयोगी, 2023)। एक महीने के बाद मेमने पेड़ों की पतियों तथा दाने को थोडा–थोडा खाना शुरू कर देते है। पशुओं एवं उनके बच्चों को मिनरल्स की पूर्ति हेतु समय–समय पर मिनरल्स मिंक्चर पाउडर या ईंट (बटीका) दाना में मिलाकर या अलग से देते रहनी चाहिए जिससे पशुओं के शरीर में मिनरल्स की कमी ना हो। राजस्थान के गांव के लोगों को सॉंभर झील का मोटा नमक, काला नमक

के साथ सेंधा नमक बीच–बीच में पशु आहार में मिश्रण करके खिलाते रहना चाहिए। जिससे पशुओं के शरीर में मिनरल्स की कमी से बचाया जा सकता है और पशुपालक को बीच बीच मे अपनी खेत की मिट्टी की भी जांच कराकर ही उपयुक्त पोषक तत्व की पूर्ति के लिए रसायनिक खाद ईस्तमाल करना चाहिए जिससे चारा एवं फसलों में पोषक तत्वों की अधिकता बनी रहती है। पशुपालक को फसल की पैदावार के समय दाना खरीदकर रखना चाहिए। उसको वैज्ञानिक तरीके से पशु आहार स्वंय के घर/फार्म पर सस्ते दर पर निर्माण कर सकते है। जिससे मंहगा पशु आहार बाजार से खरीदना नहीं पडेगा। ज्यादातर पशुओं को 1 से 1.5 प्रतिशत शारीरिक भार के हिसाब से दाना शाम को नियमित रूप से खिलाने पर शारीरिक भार में बढिया वृद्धि प्राप्त की जा सकती है।

प्रजनन प्रबंधन

1. प्रजनन के लिए शारीरिक रूप से उत्कृष्ट नर एवं मादा का चयन करना चाहिए, जिससे की प्रति भेड़ का लम्बे समय तक उत्पादन लिया जा सके। प्रजनन का समय ऐसा चुनना चाहिए कि पैदा होने वाले मेमने को अत्यधिक सर्दी एवं गर्मी के कारण उत्तरजीविता प्रभावित ना हो। तथा प्रजनन ऐसे समय में चुनना चाहिए कि पशुओं का गर्भाकाल के दौरान प्रचुर मात्रा में चारा, दाना, पानी एवं कम से कम पर्यावरण तनाव से गुजरना रहे। प्रजनन प्रबन्धन का सही समय का चुनाव एवं उपयुक्त देखभाल के कारण पैदा होने वाले नवजात का जन्मभार अच्छा प्राप्त होता है। जिससे बच्चों की अच्छी शारीरिक वृद्धि एवं मृत्युदर भी कम होती है। कमजोर, बुढ़ी एवं बेकार पशुओं को समय–समय पर रेवड़ में से निकाल देना चाहिए, जिनसे ऐसे पशुओं में अनावश्यक होने वाला खर्चे से बचा जा सके।

2. ग्याभिन पशुओं को बच्चा देने के एक माह से पहले ज्यादा दूरी की चराई कम करनी चाहिए। पशुओं को अन्तिम समय में जंगल/चारागाह में घर के आसपास ही चराई करानी चाहिए। जिससे पशुओं को कम से कम तनाव से गुजरना पडें। ग्याभिन भेड–बकरी को ब्याने के बाद घर में बने बाड़े/जनन कक्ष में ही रखना चाहिए। जनन कक्ष की सुखी मिट्टी एवं सूखी घास का बिछावन करना चाहिए, ब्याने के से पहले भेड़ की योनि के आसपास एवं पूंछ के बाल कैंची से काट देना चाहिए। जिससे गन्दगी की वजह से किसी भी प्रकार का संक्रमण भेड़ की योनि में ना फैले।

3. भेड़–बकरी के बच्चों को पैदा होने के बाद 6–7 दिन तक माँ के पास ही रखना चाहिए। जिससे माँ के द्वारा अपने बच्चों को चाटने से बच्चे का रक्त प्रवाह ठीक से होने लगता है तथा इससे माँ की बच्चों के प्रति ममता भी बढ़ जाती है। पैदा हुये बच्चे के नाक एवं मुँह के पास अच्छे से सफाई करनी चाहिए, जिससे बच्चे को श्वास लेने एवं दूध पीने में कोई दिक्कत ना हो। बच्चों की नाभि को शरीर से 3–4 सेंमी नीचे से कसकर बांध देना चाहिए और उसके एक सेंमी नीचे काटकर टिंचर आयोडीन लगा देना चाहिए। माँ के खुर की भी आवश्यक छँटाई (ट्रीमिग) कर देनी चाहिए। नवजात पैदा हुये बच्चे को आधे घण्टे के भीतर ही माँ का पहला दूध (खीस) अवश्य ही पिलाना चाहिए। क्योंकि यह खीस बच्चे को रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक है। शुरूआत में बच्चो को ज्यादा माँ का दूध/खीस नहीं पिलाना चाहिए। इससे बच्चों को दस्त लग सकता है। शुरूआत में पैदा हुआ बच्चों के पेट साफ करने के लिए पांच मिलीग्राम पाराफीन पिलानी चाहिए। जिससे बच्चों के पेट की सफाई की जा सके। पैदा होने वाले बच्चों को तीन हफते बाद मुलायम पत्तियों वाला चारें (शहतूत, जीन्जा, आंवला, सहजन, अमरूद आदि) की कुछ शाखायें दी जानी चाहिए, जिससे छोटे बच्चे पतियों को पकड़ना एवं खाना सीख सके। शुरूआत में मेमने को 10–15 ग्राम प्रति बच्चा मिश्रित दाना भी देना चाहिए तथा साथ में बाड़े में मिनरल्स मिंक्चर ईंट भी बच्चों के बाड़े में लगी होनी चाहिए। जिससे बच्चे ईंट को चाटकर जरूरी मिनरल्स तत्वों की जरूरत पूरी कर सके। छोटे बच्चों को शुरूआत के 40–45 दिन माँ के दूध दिन में समय–समय पर मिलता रहना चाहिए। उसके बाद बच्चे स्वंय से हरी पतियों का चारा एवं दाने खाने लगते है। छोटे बच्चों को कम आयु में मांस के लिए तैयार करने के लिए संन्तुलित मिश्रित दाना आहार जरूरी होता है।

4. बहुप्रज अविशान भेड़ से पैदा होने वाले जुडवा, ट्रिपलेट एवं क्वाड्राप्लेट बच्चो का विशेष ख्याल रखने की जरूरत है। भेड़–बकरी एक से दो तक बच्चों को जन्म देने पर अपने दूध से पाल लेती है। जुडवा बच्चे बिना प्रतिस्पर्दा के माँ की दो दुग्ध ग्रन्थि से सुबह–शाम आसानी से दूध पी सकते हैं। लेकिन तीन या चार बच्चों को पालने के लिए बोतल से भेड़/बकरी का दूध दो से तीन बार जन्म से लेकर 2.5 माह तक पिलाकर तीन/चार बच्चों को पाला जा सकता है। क्योंकि मा का दूध तो केवल दो बच्चे ही पी जाते है। इसके लिए हमारे संस्थान ने मेमनाप्राश का उपयोग करके भी तीन/चार पैदा हुये बच्चों को पालने में सफलता पायी है। एक माह के बाद बच्चे बाहर से हरा चारा और दाना खाने लगते है (अमर सिंह एवम सहयोगी, 2023)।

स्वास्थ्य प्रबन्धन

समय–समय पर भेड़–बकरी को संक्रामक रोगों (फड़किया, चेचक, खुर–मुहपकों आदि) के रोग निरोधक टीके लगवाने

चाहिए। अस्वस्थ पशुओं को नियमित रूप से पहचान कर समय रहते पशु चिकित्सक से उनका उपचार करवाना चाहिए। साल में एक या दो बार आवश्यकतानुसार अन्त परजीवियों को समाप्त करने के लिए कृमिनाशक दवा पशुओं को देना चाहिए। बाह्य परजीवियों से बचाव एवं उपचार के लिए साल में एक से दो बार सॉयथीयान या मैलाथीयन का घोल बनाकर भेड़/बकरी को नहलाना चाहिए। अन्तः व बाह्य परजीवियों के नियत्रण हेतू दवाईंयों का प्रयोग पशु चिकित्सक की देखरेख व सलाहनुसार ही करना चाहिए, अन्यथा हानि होने की संभावना रहती है (अनाम, 2022)।

अविकानगर संस्थान की टीकाकरण सारणी

टीकाकरण	पुनरावति	टीकाकरण का समय
चेचक (पॉक्स)	साल मे एक बार	दिसम्बर
पीपीआर	तीन साल मे एक बार	दिसम्बर
फड़किया+टेटनस (एन्टेरोटाक्सिमिया)	साल मे दो बार	जून व दिसम्बर
खुर–मुहपका (एफएमडी)	साल मे दो बार	मई व नवम्बर (ज्यादातर बकरी में उपयोग)
कृमिनाषक	साल मे एक बार	अगस्त या सितम्बर (बारिष के षुरू होने के एक माह बाद)
बाहा–परजीवी	एक बार	गर्मियों में भेड की ऊन कतरने के 15 दिन बाद

नोट–: टीकाकरण एवम उसकी डोज पशुचिकित्सक की परामर्श अनुसार ही करना चाहिए। टीकाकरण एवम पुनरावत्ति डोज कंपनी की सिफारिश पालना अनुसार ही होना चाहिए ।

बच्चों के पैदा होने के 2.5 माह के बाद टीकाकरण किया जाना चाहिए। प्रत्येक टीके में 10–15 दिन का अन्तराल होना चाहिए। भेड़–बकरी में फड़किया–टेटनेस के टीके की दो डोज 10–15 दिन के अन्तराल पर, फिर चेचक ओर पीपीआर का टीकाकरण होता है (अनाम, 2022)। बकरियों में खुर–मुहपकों का टीका भी लगाना पड़ता है। रेवड़ में 100 प्रतिशत टीकाकरण होने से संक्रामक बीमारियों के आने की संभावनाएं काफी कम हो जाती है।

निष्कर्ष

भारत सरकार द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए राष्ट्रीय पशुधन मिशन की शुरूआत की गई है। जिससे गांवो की 60 प्रतिशत से ज्यादा आबादी को खेती एवं पशुपालन आधारित व्यवसाय से आत्मनिर्भर बनाया जा सके। वर्तमान समय में भेड़–बकरी पालन का व्यवसाय एक अच्छे स्टार्टअप का रूप लेते जा रहा है। जिसमें सभी धर्मों, शिक्षित/अशिक्षित, प्रगतिशील किसानों द्वारा वैज्ञानिक भेड़–बकरी पालन में दक्षता अर्जित करने के लिए अविकानगर संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त करने आ रहें हैं। यदि वर्तमान समय में किसान अपने पास उपस्थित संसाधनों के आधार पर उन्नत तरीके से पालन करें तो निश्चित ही वह अच्छी आमदनी कमा सकता है। अविकानगर संस्थान भेड़–बकरी के उद्यमिता विकास के लिए अपने पूरे प्रयास किसान हित में कर रहा है। भेड़–बकरी में टीकाकरण के बाद अच्छे फार्म प्रबंधन से ही अच्छी पैदावार ली जा सकती है। जो किसान प्रथम बार में भेड़–बकरी पालन का व्यवसाय शुरु करना चाहते है, वह शुरूआत में छोटे स्तर से करते हुए धीरे–धीरे बड़े स्तर पर जाएं एवं भेड़–बकरी को बाजार मांग के अनुसार तैयार करके अच्छा मुनाफा कमायें।

संदर्भ

Anonymous (2022). ICAR-CSWRI Prasar Patra. Farmer First Publication. 02: 9-10.

Meena, A.S., Sharma, R.C., Kumar, R., Mallick, P.K. and Kumar, A. (2023). Prolific Avishaan sheep toward doubling the farmer income: A review. Bhartiya Krishi Anusandhan Patrika. 38(1): 01-05. doi: 10.188 05/ BKAP565.

Rajiv Kumar, Meena, A.S., Sharma, R.C., Malik, P.K. and Kumar, A. (2022). Avishaan sheep importance in National Livetsock Mission. Avipunj. 15: 1-3.